

युग की माँग: प्रतिभा परिष्कार

आम आदमी की अन्तर्निहित ऊर्जा को जाग्रत करने का वैज्ञानिक एवं आध्यात्मिक रोडमैप



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदपूति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

हमारे समय के दो भारी दबाव और उनका एकमात्र समाधान



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से – “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का ज्ञान शरीर प्रकाश जन-जा-जन के बीच में पहुँचाना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा – सब रूप में जन-शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

मानव चेतना के चार स्तर: आप कहाँ खड़े हैं?



अनुनाद का नियम: अदृश्य शक्ति कैसे कार्य करती है?

सत्य की
अजेय शक्ति

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन
के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा —
सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी
साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

वानर, गीध,
गिलहरी,
केवट

समुद्र-सेतु बाँधने और
लंका विध्वंस में समर्थ

ग्वाल-बाल

गोवर्धन उठाने
में भागीदार

पाण्डव

विशाल कौरव सेना को
परास्त करने में सक्षम

ईश्वरीय चेतना शारीरिक बल नहीं, बल्कि सत्य और संकल्प के प्रति समर्पण खोजती है।
जब एक साधारण व्यक्ति इस अजेय शक्ति के साथ अपनी आवृत्ति (Frequency) मिला लेता है, तो वह अजेय बन जाता है।

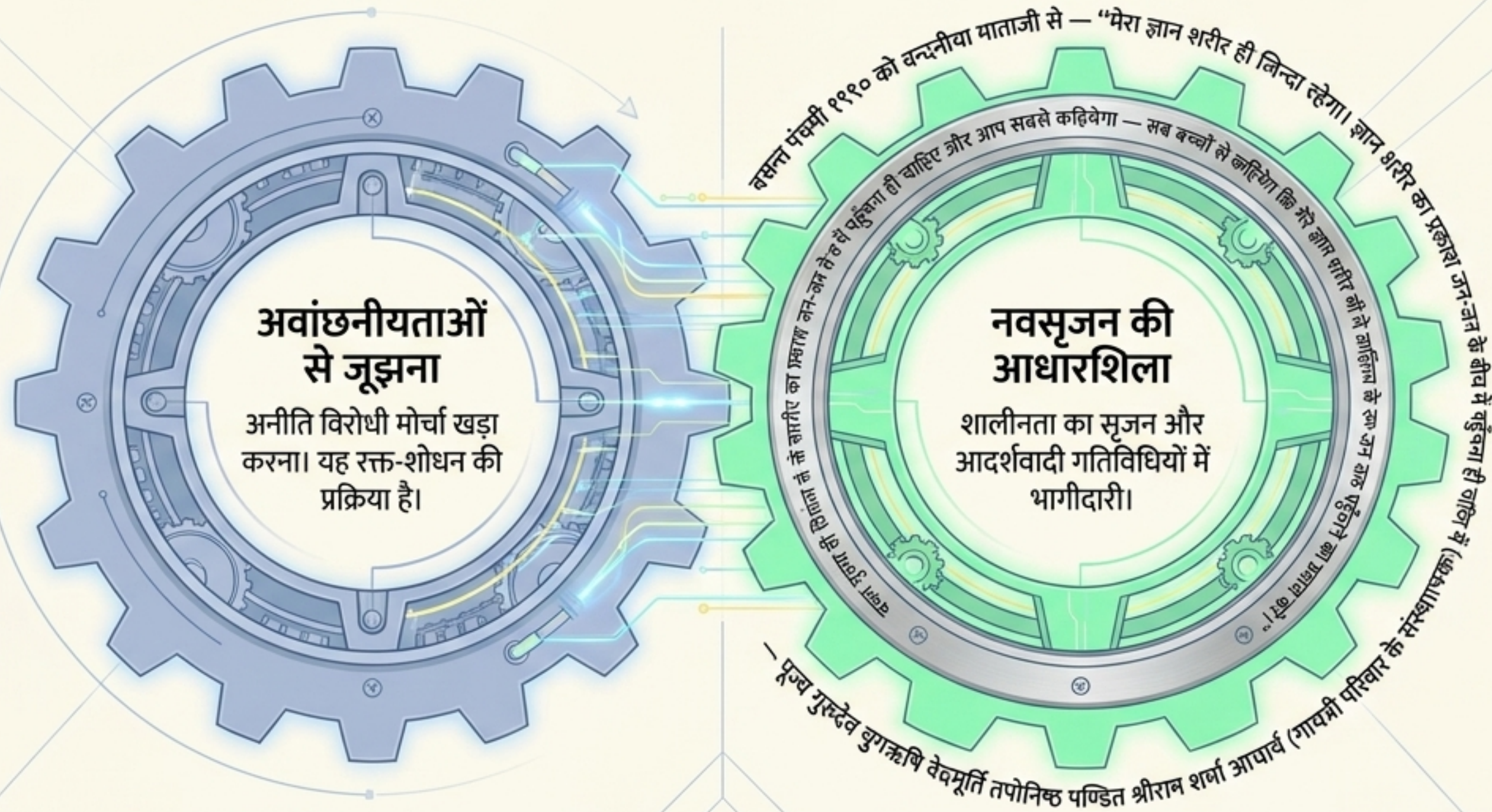
मन्थन और निष्कर्षण: प्रतिभा आसमान से नहीं टपकती



विशिष्टता का नए सिरे से उभार: सामान्य हाड़-माँस की काया से देवत्व का उदय भी
इन्ही वैज्ञानिक प्रक्रियाओं (तप और साधना) के मन्थन से होता है।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा – सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

युगसृजन की दोधारी रणनीति



यह एक दोधारी तलवार है। एक पहिये के बिना दूसरा नहीं घूम सकता।
बुराई से लड़े बिना केवल अच्छाई का निर्माण एक भ्रम है।

नश्वर संपदा बनाम स्थायी पूँजी

यह सब मरण के
ही लक्षण हैं।

भौतिक धन

रूप-यौवन

शारीरिक ऊर्जा

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर
का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही
चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब
बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को
मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में
जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव गुगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ
पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

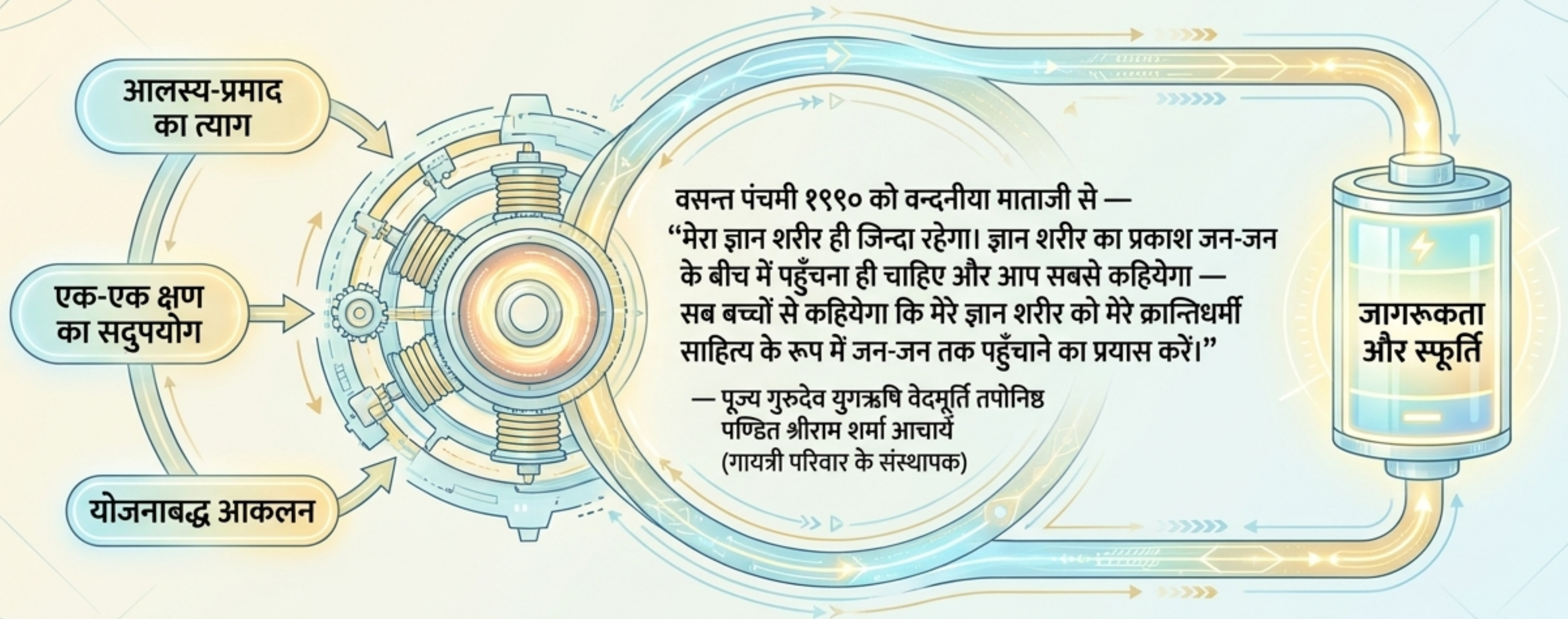
वही हर स्थिति में साथ रहती
है, अपनी तथा दूसरों की
गुथियाँ सुलझाती है।

प्रतिभा

सूझ-बूझ

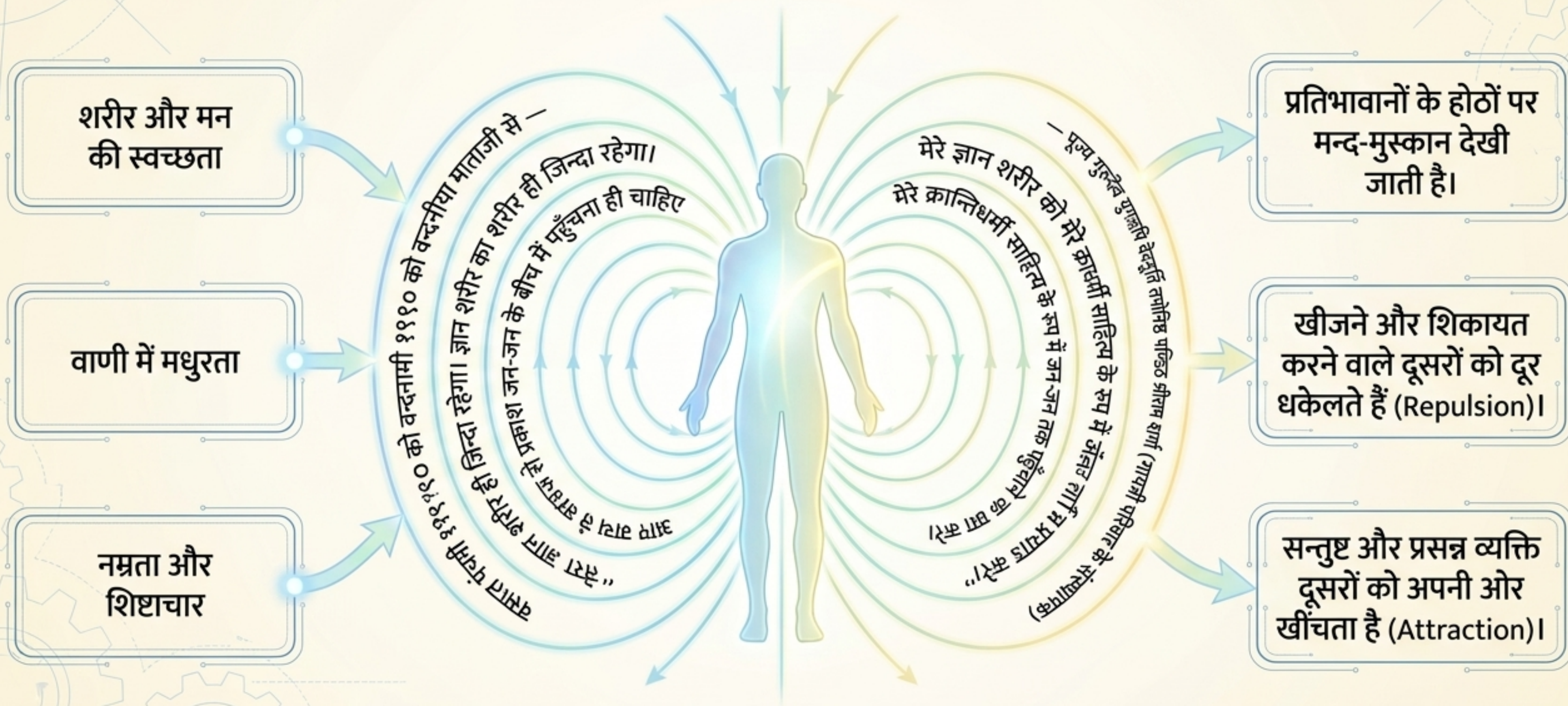
चुम्बकत्व

प्रथम सिद्धान्त: क्षमताओं का अभिवर्धन (महाजागरण)



डायनेमो घूमता है तो बैटरी चार्ज होती है। विचारों और कार्यों के निरन्तर समन्वय से ही व्यक्तित्व का स्तर बनता है। अर्द्ध-तंद्रा (Half-sleep) से बाहर आएं।

द्वितीय सिद्धान्त: चुम्बकीय व्यक्तित्व का निर्माण



तृतीय सिद्धान्त: सुव्यवस्था का विज्ञान



अस्त-व्यस्त स्थिति में प्रचुर साधन रहते हुए भी लोग असफल रहते हैं।
जड़ता और हठवादिता प्रगति की सबसे बड़ी शत्रु हैं।



चतुर्थ सिद्धान्त: अग्रगमन और साहस (नेतृत्व)

रेल का इंजन एकाकी चलता है।
स्वयं दौड़ता है और अपने साथ
डिब्बों की शृंखला को घसीटता है।

आत्महीनता से ग्रसित, जो
अन्यों के पीछे चलने की
प्रतीक्षा करते हैं।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में
क्रान्तिधर्मी शास्त्र में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी
— पूज्य गुरुदेव युगक्रान्ति वेदगुरु पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य।” के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

सही मार्ग का अवलम्बन एकाकी कर दिखाएं।
समर्थन न मिलने पर भी साहसपूर्वक आगे बढ़ना ही नेतृत्व है।

प्रतिभा का अभेद्य कवच: चारों सिद्धान्तों का समन्वय

महाजागरण

चुम्बकत्व

सुव्यवस्था

अग्रगमन

वसन्त पंचमी १९९० को
वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा।
ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में
पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा —
सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को
मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन
तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति
तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

इन चारों के समन्वय से वह **‘महासिद्धि’** प्राप्त होती है,
जो भौतिक सफलताओं और आध्यात्मिक महानता दोनों की अचूक गारंटी है।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

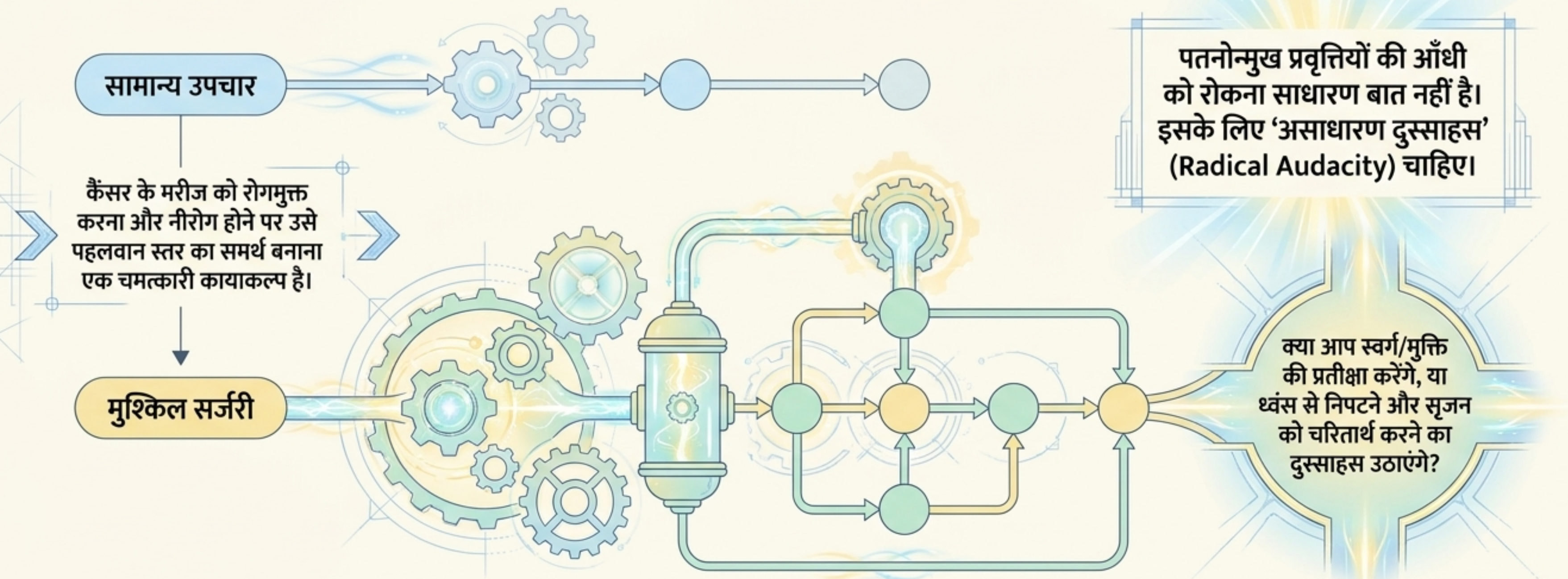
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

ऐतिहासिक सिद्धियाँ: कोई जादू नहीं, केवल साहस का हस्तान्तरण



ऋद्धियों-सिद्धियों द्वारा किसी को बाजीगर नहीं बनाया जाता।
यह एक महाप्राण द्वारा दूसरे को ‘आदर्शवादी साहस’ का सीधा हस्तान्तरण है।

युग-सर्जन की चुनौती: एक मुश्किल सर्जरी



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

आम आदमी के लिए महाकाल का आमंत्रण

स्रष्टा को अभी
महाप्रलय स्वीकार
नहीं है।
इसलिए नवसृजन
सुनिश्चित है।

युग का
दबाव

ऐतिहासिक
पुकार

देवता असमर्थों पर
कृपा नहीं करते।
महाकाल प्राणवानों
के सामने गिड़गिड़ाते
नहीं, बल्कि उन्हें
'भागीदार' बनने का
निमंत्रण देते हैं।

ईश्वरीय
अनुदान

अपनी प्रसुप्त
शक्तियों (Inner
Dynamo) को जगाएं।
यह केंचुल बदलने का
समय है।

आप

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
जानाती से — भरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।"
कहियेगा — "सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।"
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)